

तुम प्यारे रघुवर राम के बृज बिहारी श्याम के॥
 भक्त कल्पतरु प्रणतनि पालकु दास वत्सलु साई
 भाव राज सुख साज में साई स्थिति हो सदाई
 नितु नेही पद अभ्राम के॥

सति संगति सींगार अधीननि के आधार प्यारे
 कथा कुंज के नित्य निवासी रसिकनि जीअ जिआरे
 गायक हरि गुण ग्राम के॥

सुख निवास के विहरणहारे संत शिरोमणि स्वामी
 भक्ति बीज के बोवनहारे सीय राघव अनुगामी
 भूषण हो धरा धाम के॥

लली लाल को लाड़ लड़ावत नितु नव चोज विनोदी
 युगल किशोर के बाल केल सों भरी रहे तव गोदी
 निरखि चरित आठों याम के॥

निज वृन्दावन का दर्शन करि नयन चढ़े खुमारी
 रास विलास हुलास रैन दिन सदां बसंत बहारी

जंह भय नहीं ठंडि धाम के॥
आशीश प्रिय अविलंब दीन के सुख सिंधु अमानी
संत पथ प्रदर्शक पुनीत शुभ मति के दानी
विजई मोह मद काम के॥

श्री मैगसि चंद्र मनोहर बापू सुख सागर नाथा
भव डूबत कई अधम उधारे पकड़ पकड़ हाथा
दीए अवलम्ब हरी नाम के॥